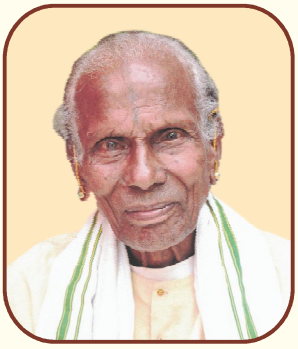

GURU GOPINATH SWAIN

Guru Gopinath Swain is a teacher and performer of traditional Krishna Leela for the last nine decades.

2. Born on 15th February, 1918, Shri Swain began learning Krishna Leela from the young age of 10 years from his father's elder brother. He then began singing the songs and playing the role of Krishna, learning them according to the early 20th-century practice with elaborate raga alapa (elaboration) and binyasa (improvisation) from Guru Choudhury Behera. He specialises in the Krishna Leela authored by 18th-century saint Babaji Dukhisyama Dasa in the Odia language and based on Odissi music. He has widely performed and trained hundreds of students in this form through several traditional akhada schools. He is known for his collection of rare classical ragas, improvisation techniques and his uncompromising dedication towards maintaining the complex archaic methods of presentation. Over time he played many other roles, finally becoming the main singer-director and Guru.

3. In his career as a Guru, Shri Swain observed rare old ragas and songs of the tradition gradually fading away. This realisation led him to devote himself to collecting and learning endangered parts of the repertoire from the seniormost gurus of the form alive in the 1940-50s. He gradually mastered the entire repertoire. He continues to sing and teach rare ancient Odissi ragas such as Dakhinasri, Chinta Desakliya, Todi Bhatiari, Bhatiari, Kumbha Kamodi, Punnaga, Kedara Kamodi among others. His exceptional voice culture sadhana has allowed him to maintain a powerful voice that can move across octaves effortlessly even at the ripe age of 106. As a researcher, he has collected detailed information about the origin and history of the Dukhisyama Krishna Leela from early manuscripts, which he preserves in his collection. He has also recorded several hours of Krishna Leela for All India Radio Berhampur and been interviewed by Doordarshan Kendra, Bhubaneswar, propagating information about this rare form.

4. Shri Swain has set up and taught in traditional akhadas (village schools for troupes) in a huge number of villages in Odisha and beyond. Many of his disciples are established Gurus in their own right who carry forward this rare art form.

5. Shri Swain is the recipient of several awards, among them the prestigious Odisha Sangeet Natak Akademi award in 2023. For his great contribution and mastery over Krishna Leela, Shri Swain has received Swama Kundala and Khadu (Golden Earrings and Bangles) from royal patrons.

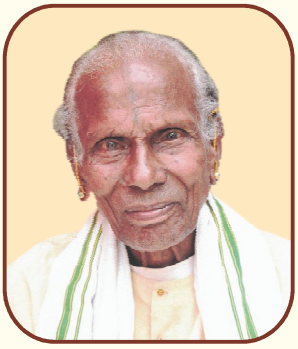

गुरु गोपीनाथ स्वाइँ

गुरु गोपीनाथ स्वाइँ पिछले नौ दशकों से पारंपरिक कृष्ण लीला के शिक्षक और कलाकार हैं।

2. 15 फरवरी 1918 को जन्मे श्री स्वाइँ ने 10 वर्ष की छोटी उम्र से ही अपने पिता के बड़े भाई से कृष्ण लीला सीखना शुरू कर दिया था। इसके बाद उन्होंने गीत गाना और कृष्ण की भूमिका निभाना शुरू किया और गुरु चौधरी बेहरा से 20 वीं शताब्दी की प्रथा के अनुसार विस्तृत राग अलाप (विस्तार) और बिन्यास (इंप्रोवाइजेशन) के साथ इसे सीखा। वह 18वीं सदी के संत बाबाजी दुखिस्यामा दास द्वारा उड़िया भाषा में लिखित और ओडिसी संगीत पर आधारित कृष्ण लीला में विशेषज्ञ हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर प्रस्तुतियां दी हैं और कई पारंपरिक अखाड़ा स्कूलों के माध्यम से सैकड़ों विद्यार्थियों को इस कला रूप में प्रशिक्षित किया है। उन्हें दुर्लभ शास्त्रीय रागों के संग्रह, इंप्रोवाइजेशन तकनीकों और प्रस्तुति के जटिल पुरातन तरीकों को बनाए रखने के प्रति उनकी दृढ़प्रतिज्ञ लगन के लिए जाना जाता है। समय के साथ उन्होंने कई अन्य भूमिकाएँ निभाईं, आखिर में वह मुख्य गायक–निर्देशक और गुरु बने।

3. गुरु के रूप में अपने करियर में, श्री स्वाइँ ने धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही इस परंपरा के पुराने दुर्लभ रागों और गीतों का गायन किया। इसके बाद उन्होंने 1940–50 के दशक के जीवित वरिष्ठतम गुरुओं से इस संग्रह के लुप्तप्राय हिस्सों को इकट्ठा करने और सीखने में खुद को समर्पित कर दिया। धीरे–धीरे उन्होंने पूरे संग्रह में महारत हासिल कर ली। वह अब भी अन्य के अलावा दखिनाश्री, चिंता देसाकलिया, टोडी भटियारी, भटियारी, कुम्भ कामुदी, पुन्नागा, केदार कामुदी जैसे दुर्लभ प्राचीन ओडिसी रागों को गाते और सिखाते हैं। उनकी असाधारण वॉयस कल्चर साधना ने उनकी आवाज़ को दमदार बनाए रखा है जो 106 वर्ष की बड़ी उम्र में भी आराम से कितने भी ऊंचे सुर में जा सकती है। एक शोधकर्ता के रूप में, उन्होंने प्रारंभिक पांडुलिपियों से दुखीस्याम कृष्ण लीला की उत्पत्ति और इतिहास के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र की है जिसे उन्होंने अपने संग्रह में संरक्षित रखा है। उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो बेरहामपुर के लिए कृष्ण लीला के कई घंटे भी रिकॉर्ड किए हैं और इस दुर्लभ रूप के बारे में जानकारी का प्रचार करने के लिए दूरदर्शन केंद्र, भुवनेश्वर ने उनका साक्षात्कार लिया है।

4. श्री स्वाइँ ने ओडिशा और उसके बाहर के गांवों में बड़ी संख्या में पारंपरिक अखाड़ों (मंडलियों के लिए ग्रामीण स्कूल) की स्थापना की और उनमें पढ़ाया है। उनके कई शिष्य अपने आप में स्थापित गुरु हैं जो इस दुर्लभ कला को आगे बढ़ा रहे हैं।

5. श्री स्वाइँ को कई पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें 2023 में प्रतिष्ठित ओडिशा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी शामिल है। कृष्ण लीला में उनके महान योगदान और महारत के लिए, श्री स्वैन को शाही संरक्षकों ने स्वामाकुंडल और खाडू (सोने के कर्णफूल और चूड़ियां) प्रदान किए हैं।